छत्तीसगढ़ी सिनेमाः चुनौतियां और संभावनाएं

डॉ. गुरु सरन लाल
सहायक प्राध्यापक,
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.),
gurusaranlal@gmail.com

छत्तीसगढ़ी सिनेमा को बालीबुड की तर्ज पर 'छालीबुड' भी कहा जाता है। छत्तीसगढ़ी फिल्मों ने छत्तीसगढ़ राज्य की कला संस्कृति, बोली-भाषा, रहन-सहन पहनावा, सादापन, देशीपन को अपनाया है। छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रचार-प्रसार में छत्तीसगढ़ी फिल्मों की महत्वपूर्ण भूमिका है। एक तरफ जहां प्रशिक्षित कलाकारों, तकनीशियनों की कमी है, लोकेशन और बजट का अभाव है वहीं दूसरी तरफ छत्तीसगढ़ी फिल्में अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं। इसी वर्ष छत्तीसगढ़ फिल्म विकास निगम की स्थापना हुई है, इससे फिल्मों के निर्माण एवं प्रदर्शन में अवश्य तेजी आएगी। छत्तीसगढ़ी फिल्मों का प्रदर्शन पीवीआर सिनेमा, ग्लिट्ज सिनेमा आदि मल्टीप्लेक्स में भी प्रदर्शित हो रही हैं।

ऐतिहासिक परिदृश्यः

छत्तीसगढ़ी फिल्मों का इतिहास लगभग 53 वर्षों का है। पहली छत्तीसगढ़ी फिल्म 'कहि देबे संदेस' सन् 1965 में प्रदर्शित हुई थी। इसे मनु नायक ने निर्देशित किया था। इसके बाद दूसरी छत्तीसगढ़ी फिल्म विजय कुमार पांडे द्वारा निर्देशित 'घर-द्वार' सन् 1971 में रिलीज हुई। 'घर-द्वार' के बाद करीब तीस साल तक कोई छत्तीसगढ़ी फिल्म परदे पर नहीं आई। इस दौरान कुछ वीडियो एलबम का निर्माण हुआ जिसे दर्शकों ने काफी पसंद किया। इसमें 'जय मां बम्लेश्वरी' भी शामिल है।

अक्टूबर 2000 में छत्तीसगढ़ी सिनेमा पुनर्जीवित हो उठा, जब निर्माता-निर्देशक सतीश जैन की फिल्म 'मोर छंइहा भुंइया' रिलीज हुई। यह फिल्म सिल्वर जुबली रही। दर्शकों ने काफी सराहा। लगभग 25 लाख की लागत में निर्मित इस फिल्म ने 2 करोड़ का बिजनेस किया। इसके बाद 'मया', 'टूरा रिक्शावाला', 'लैला टीपटॉप छैला अंगूठा छाप' फिल्मों को सतीश जैन ने निर्देशित किया। 'मया' ऐसी पहली फिल्म थी जिसका 'मया-2' शीर्षक से सिक्वल बना। सतीश जैन सबसे सफल छत्तीसगढ़ी फिल्म निर्देशक कहे जा

सकते हैं। इसके बाद 'सलाम छत्तीसगढ़', 'सोन चिरैया', 'भुला झन देबे', 'बहिनी के मया', 'कका', 'बिदाई', 'अब्बड़ मया करथंव', 'बइरी सजन' जैसी फिल्में बनी।

नई प्रतिभाओं में अभिनेता, लेखक और निर्देशक अनुपम भार्गव द्वारा अभिनित और निर्देशित फिल्म 'तीन ठन भोकवा' 2017 में प्रदर्शित हुई जिसे काफी सराहना मिली। यह कॉमेडी फिल्म थी। इस फिल्म की सफलता को देखते हुए 'भोकवा टूरा' नाम से वेब सीरीज का भी निर्माण किया गया। इससे पहले अनुपम भार्गव की फिल्म 'मिशन छत्तीसगढ़' 2016 में रिलिज हुई थी। सन् 2018 में रिलीज हुई फिल्म 'हमर फैमिली नम्बर -1' है।

कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ी सिनेमा लगातार आगे बढ़ता जा रहा है। नई प्रतिभाएं इस क्षेत्र में काम कर रही हैं। नये विषय, नई सोच, नये ट्रीटमेंट के साथ विषय को प्रस्तुत किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ सरकार ने इसी साल 'छत्तीसगढ़ फिल्म विकास निगम' की स्थापना की है। इससे सरकार की मंशा जाहिर होती है कि वे छत्तीसगढ़ी फिल्मों को लेकर गंभीर हैं।

चुनौतियां :

अच्छी स्क्रिप्ट की जरूरतः

छत्तीसगढ़ी सिनेमा में अच्छी कहानी की कमी है। हालांकि यह बालीबुड की भी एक बड़ी समस्या है। छत्तीसगढ़ी फिल्में मुख्यतः पारिवारिक एवं एक्शन फिल्में होती हैं। फिल्मों के माध्यम से इंटरटेनमेंट के साथ-साथ सोशल मैसेज देने का कार्य किया जाना चाहिए। छत्तीसगढ़ी सिनेमा में रिमेक का भी चलन बढ़ा है। अन्य भाषाओं की फिल्मों का हूबहू रिमेक छत्तीसगढ़ी फिल्म में किया जा रहा है। इसकी बहुतायत से बचना होगा। फूहड़ गीत-संगीत की जगह सार्थक गीत-संगीत को जगह देनी होगी।

सिनेमा हाल तक दर्शकों को खींचनाः

छत्तीसगढ़ी फिल्मों के प्रदर्शन हेतु थियेटर कम हैं। मल्टीप्लेक्स में भी पर्याप्त स्क्रीन्स नहीं मिल पाती हैं। ऐसे में फिल्मों की कमाई पर असर पड़ता है। फिल्मों का बजट भी कम होता है। बजट बढ़ेगा तो गुणवत्ता भी बढ़ेगी।

सिनेमा हॉल को विकसित व संरक्षित करनाः

सरकार को छोटे शहरों-कस्बों में बंद पड़े सिनेमाघरों को पुनः खोलना चाहिए। केवल रायपुर, बिलासपुर, भिलाई और दुर्ग जैसे शहरों के अलावा जहां मूलरूप से छत्तीसगढ़ी फिल्मों के दर्शक हैं, छोटे-छोटे शहरों-कस्बों में सिनेमाघरों को खोला जाना चाहिए। उन्हें संरक्षित किया जाना चाहिए। इससे छत्तीसगढ़ी फिल्मों के प्रदर्शन में विस्तार होगा। फिल्में अधिक ऑडियंस समूह तक पहुंच पाएंगी और फिल्मों का बिजनेस भी अच्छा होगा।

फिल्म निर्माण की तकनीक का अभावः

छत्तीसगढ़ी फिल्मों के निर्माण क्षेत्र में दक्ष टेक्निशियनों का अभाव दिखता है। इससे फिल्मों में विजुअल इफेक्ट्स, एडिटिंग, डबिंग इत्यादि उच्च गुणवत्ता का नहीं होता। दक्षिण भारतीय सिनेमा की बात की जाए तो वहां फिल्मों में तकनीकी का बखूबी इस्तेमाल होता है। तकनीकी मामलों में वे बालीवुड से भी आगे हैं।

सुरक्षा व संरक्षण का अभावः

छत्तीसगढ़ी फिल्मों के निर्माण से जुड़े लोगों को सुरक्षा और संरक्षण प्रदान करना भी किया जाना चाहिए। इससे वे उन्मुक्त रूप से फिल्मों के निर्माण कर सकते हैं। लोकेशन, आवागमन इत्यादि में सुरक्षा प्रदान किया जाना चाहिए।

संभावनाएः

एक तरफ जहां छत्तीसगढ़ी सिनेमा में कई चुनौतियां हैं तो संभावनाएं भी बहुत हैं। अभिनेता, गीतकार और छत्तीसगढ़ फिल्म विकास निगम के अध्यक्ष श्री राजेश अवस्थी ने बताया कि छत्तीसगढ़ी सिनेमा में काफी संभावनाएं हैं। छत्तीसगढ़ फिल्म विकास निगम की स्थापना हो चुकी है। हम लोग फिल्मसिटी बनाये जाने की मांग कर रहे हैं। भविष्य में फिल्म समाराहों के आयोजन की तैयारी है। छत्तीसगढ़ी भाषा में टीवी धारावाहिकों के निर्माण की भी योजना है। 'छइयां भुइयां' फिल्म की अपार सफलता के बाद 'मया', 'मया-2', 'टूरा रिक्शावाला' आदि फिल्मों को दर्शकों ने काफी सराहा। फिल्म निर्माण की सारी प्रक्रियाएं छत्तीसगढ़ में ही पूरी की जाती हैं। केवल सेंसर सर्टिफिकेट और सैटेलाइट डाउनलोडिंग के लिए मुंबई जाना पड़ता है।

फिल्मकार एवं पत्रकार श्री तापेश जैन का मानना है कि छत्तीसगढ़ी फिल्मों के माध्यम से छत्तीसगढ़ी भाषा को मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा मिली है। छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रचार-प्रसार में छत्तीसगढ़ी फिल्मों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सतीश जैन, प्रेम चन्द्राकर, डॉ. पुनीत सोनकर जैसे फिल्म निर्देशकों ने अच्छे सिनेमा का निर्माण किया है। इसके अलावा कुछ स्तरहीन मुम्बईया शैली में फिल्मों का भी निर्माण हुआ जो दर्शकों की उपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर रही हैं। ऐसे प्रयासों का सम्मान है, लेकिन सुधार की जरूरत है। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ी संस्कृति, सारी संस्कृतियों का संगम है। इसलिए 'छत्तीसगढ़िया-सबले बढ़िया'। छत्तीसगढ़ी में लोककलाओं की समृद्धि परंपरा है इनमें पंथी, पंडवानी, नाचा आदि शामिल है। छत्तीसगढ़ी फिल्मों में छत्तीसगढ़ी लोककलाओं को शामिल किए जाने की जरूरत है।

चुनौतियों की बात करते हुए श्री तोपेश जैन ने बताया कि फिल्म निर्माण की विभिन्न विधाओं में प्रशिक्षण की आवश्यकता है इसके लिए फिल्म एकेडमी खोला जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में न कहानी की कमी है न कहने वालों की कमी है। जरूरत है बस थोड़े से प्रशिक्षण की। छत्तीसगढ़ में भोजपुरी फिल्में भी बन रही हैं। सबका स्वागत है, सम्मान है। फिल्मसिटी बनाये जाने की भी मांग चल रही है।

निष्कर्षः

छत्तीसगढ़ी सिनेमा ने अभी अर्ध-दशक का समय तय किया है। विगत 18 सालों में छत्तीसगढ़ी फिल्मों के निर्माण और प्रदर्शन में तेजी आई है। सार्थक सिनेमा रचा जा रहा है। लेकिन छत्तीसगढ़ी लोक कला, लोकनृत्य, लोकजीवन को छत्तीसगढ़ी फिल्मों में समाहित किया जाना अभी बाकी है। एक तरफ अच्छी स्क्रिप्ट, बजट, लोकेशन, सिनेमाघरों की कमी जैसी चुनौतियां हैं तो फिल्मसिटी का निर्माण, फिल्मोत्सव का आयोजन जैसी संभावनाएं भी हैं। उम्मीद की जा सकती है कि आने वाले समय में रूचिकर, सार्थक छत्तीसगढ़ी फिल्मों का निर्माण होगा।

सुझावः

1. फिल्म निर्माण से जुड़े लोगों का संगठन होना चाहिए।
2. दूरदर्शन पर छत्तीसगढ़ी फिल्में प्रदर्शित होनी चाहिए।
3. सरकारी आर्थिक सहयोग एवं संरक्षण प्राप्त होना चाहिए।
4. मेले में फिल्में दिखाने की व्यवस्था होनी चाहिए।
5. फिल्मों का प्रमोशन किया जाना चाहिए।
6. फिल्मों के प्रदर्शन के लिए थियेटर पर्याप्त मात्रा में होने चाहिए।
7. सिनेमा घरों को मेंटनेंस करके फिल्मों का प्रदर्शन किया जाने चाहिए।

संदर्भ-सूचीः

1. त्रैमासिक पत्रिका 'मिशाल', अप्रैल-जून, 2013, रायपुर।
2. यादव, मंगतराम, रऊतारी, लोक सांस्कृतिक वार्षिक पत्रिका, बिलासपुर, श्री कृष्णा प्रिन्टर्स, 2013
3. सृजनगाथा डॉट काम
4. https://www.wikipedia.org
5. https://www.cgstate.gov.in